शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Year -1
Vol -11
September
2024

मूल्याधारित शिक्षा : अवधारणा, महत्व और समकालीन परिप्रेक्ष्य

[1]डॉ. आलोक अग्रवाल
[2]डॉ. भक्ति अग्रवाल
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर म.प्र.

सारांश

इस शोध पत्र में मूल्याधारित शिक्षा (Value-Based Education) की अवधारणा, इसके महत्व और वर्तमान समय में इसकी आवश्यकता पर व्यापक चर्चा की गई है। इसमें यह विश्लेषण किया गया है कि शिक्षा केवल जानकारी या कौशल प्राप्ति तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसका उद्देश्य नैतिक मूल्यों और समाज के प्रति जागरूकता का विकास भी होना चाहिए। मूल्याधारित शिक्षा का उद्देश्य छात्रों को नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से सक्षम बनाना है ताकि वे एक बेहतर और न्यायपूर्ण समाज का निर्माण कर सकें। यह शोध पत्र मूल्याधारित शिक्षा के विभिन्न पहलुओं, इसके ऐतिहासिक और दार्शनिक आधार, शिक्षण पद्धतियों और वर्तमान चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित करता है।

कुंजीभूत शब्द

शिक्षा, कौशल, नैतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, मूल्याधारित।

1. प्रस्तावना

वर्तमान समय में शिक्षा केवल ज्ञान और कौशल तक सीमित होती जा रही है, जबकि समाज में नैतिकता, ईमानदारी और मानवीय मूल्यों का ह्रास देखा जा रहा है। ऐसी स्थिति में मूल्याधारित शिक्षा की आवश्यकता और भी महत्वपूर्ण हो जाती है, जो व्यक्ति के समग्र विकास में सहायक हो। इस शोध पत्र का उद्देश्य मूल्याधारित शिक्षा की आवश्यकता, इसके सिद्धांत और आधुनिक शिक्षा प्रणाली में इसके समावेश की संभावनाओं पर चर्चा करना है।

2. मूल्याधारित शिक्षा की परिभाषा और अवधारणा

मूल्याधारित शिक्षा का तात्पर्य ऐसी शिक्षा से है, जो विद्यार्थियों को नैतिक और सामाजिक मूल्यों से परिपूर्ण करती है। इसमें शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को अच्छे और बुरे के बीच अंतर करना, समाज के प्रति उनकी जिम्मेदारियों को समझना और मानवीय मूल्यों का पालन

करना सिखाया जाता है। मूल्याधारित शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यावसायिक या तकनीकी कौशल प्रदान करना नहीं है, बल्कि नैतिकता, ईमानदारी, सदाचार, सहानुभूति, सहिष्णुता और समानता जैसे मूल्यों का विकास करना है।

3. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में मूल्याधारित शिक्षा

1. **प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली:** भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों पर विशेष ध्यान दिया जाता था। गुरुकुलों में विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ जीवन के आदर्श मूल्यों की शिक्षा भी दी जाती थी।
2. **धार्मिक शिक्षा और नैतिकता:** भारतीय धर्मों, विशेषकर हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म में शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का विकास था। इन धर्मों की शिक्षाओं में सत्य, अहिंसा, करुणा और परोपकार जैसे मूल्यों को प्राथमिकता दी गई थी।
3. **महात्मा गांधी और मूल्याधारित शिक्षा:** महात्मा गांधी ने मूल्याधारित शिक्षा को अत्यधिक महत्व दिया और इसे "बुनियादी शिक्षा" (Basic Education) का अभिन्न अंग माना। उनके विचार में शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य के चरित्र का निर्माण करना है, न कि केवल उसे रोजगार के योग्य बनाना।

4. मूल्याधारित शिक्षा का महत्व

1. **नैतिक विकास:** मूल्याधारित शिक्षा छात्रों के नैतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके माध्यम से वे नैतिक और अनैतिक के बीच के भेद को समझ सकते हैं।
2. **सामाजिक जागरूकता:** यह शिक्षा छात्रों को समाज के प्रति उनकी जिम्मेदारियों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनाती है।
3. **व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में सफलता:** मूल्याधारित शिक्षा न केवल व्यक्तिगत जीवन में बल्कि पेशेवर जीवन में भी सफलता के लिए आवश्यक है। नैतिक मूल्यों के बिना केवल तकनीकी या व्यावसायिक शिक्षा व्यक्ति को दीर्घकालिक सफलता प्रदान नहीं कर सकती।

4. **समाज में शांति और सद्भावना:** जब व्यक्ति मूल्याधारित शिक्षा प्राप्त करता है, तो वह समाज में शांति, सद्भावना और एकता को बढ़ावा देता है। इसके परिणामस्वरूप सामाजिक संघर्षों में कमी आती है।

5. मूल्याधारित शिक्षा के प्रमुख सिद्धांत

1. **समानता और समावेशिता:** मूल्याधारित शिक्षा में प्रत्येक व्यक्ति को समान माना जाता है, चाहे उसकी जाति, धर्म, लिंग या सामाजिक स्थिति कोई भी हो। यह शिक्षा सभी को समान रूप से प्राप्त करने का अधिकार प्रदान करती है।
2. **नैतिकता और ईमानदारी:** इस शिक्षा प्रणाली में नैतिकता और ईमानदारी को सर्वोपरि माना जाता है। छात्रों को सिखाया जाता है कि अपने कार्यों में ईमानदारी और नैतिकता का पालन कैसे करें।
3. **सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारी:** मूल्याधारित शिक्षा छात्रों को समाज के प्रति उनकी नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक बनाती है।
4. **सहिष्णुता और सहानुभूति:** मूल्याधारित शिक्षा में छात्रों को विभिन्न दृष्टिकोणों के प्रति सहिष्णुता और दूसरों के प्रति सहानुभूति सिखाई जाती है।

6. मूल्याधारित शिक्षा के दार्शनिक और धार्मिक आधार

1. **वेदांत दर्शन:** भारतीय वेदांत दर्शन में नैतिकता और आत्मज्ञान पर जोर दिया गया है। इस दर्शन के अनुसार शिक्षा का अंतिम उद्देश्य आत्मा का ज्ञान प्राप्त करना और ईश्वर के प्रति समर्पण करना है।
2. **बौद्ध दर्शन:** बौद्ध धर्म के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य करुणा, अहिंसा और सत्य के सिद्धांतों का पालन करना है। बौद्ध शिक्षा प्रणाली में नैतिकता और ध्यान के माध्यम से व्यक्ति का आंतरिक विकास किया जाता है।
3. **जैन दर्शन:** जैन धर्म में शिक्षा का उद्देश्य अहिंसा, अपरिग्रह और सत्य पर आधारित जीवन जीना है। जैन शिक्षा प्रणाली में नैतिकता और धर्म के प्रति समर्पण का विशेष महत्व है।

7. मूल्याधारित शिक्षा के लाभ

1. **समग्र विकास:** यह शिक्षा प्रणाली व्यक्ति के मानसिक, शारीरिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास को सुनिश्चित करती है।
2. **अच्छा नागरिक निर्माण:** मूल्याधारित शिक्षा छात्रों को अच्छा नागरिक बनाती है, जो समाज और राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझते हैं।
3. **सामाजिक और नैतिक मुद्दों के प्रति जागरूकता:** मूल्याधारित शिक्षा छात्रों को समाज में व्याप्त विभिन्न नैतिक और सामाजिक मुद्दों के प्रति जागरूक बनाती है, जैसे कि भ्रष्टाचार, असमानता, और पर्यावरणीय समस्याएँ।
4. **मानवीय मूल्यों का विकास:** यह शिक्षा प्रणाली छात्रों में मानवीय मूल्यों का विकास करती है, जिससे वे दूसरों के प्रति सहानुभूतिशील और सहयोगी बनते हैं।

8. मूल्याधारित शिक्षा की शिक्षण पद्धतियाँ

1. **सहभागी शिक्षण:** इस पद्धति में शिक्षक और छात्र के बीच संवाद और चर्चा के माध्यम से शिक्षा दी जाती है। इसमें छात्रों को नैतिक मुद्दों पर चर्चा करने और उनके समाधान ढूँढने का अवसर मिलता है।
2. **अनुभव आधारित शिक्षा:** इस पद्धति में छात्रों को व्यावहारिक अनुभवों के माध्यम से नैतिकता और मूल्य सिखाए जाते हैं। उदाहरण के लिए, उन्हें सामाजिक कार्यों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाता है।
3. **ध्यान और योग:** ध्यान और योग के माध्यम से छात्रों का मानसिक और भावनात्मक संतुलन बनाए रखा जाता है, जिससे वे अपने मूल्यों को और अधिक सशक्त बना सकें।
4. **समूह चर्चा और नैतिक कथा सुनाना:** मूल्याधारित शिक्षा में नैतिक कहानियाँ सुनाना और समूह चर्चाओं का आयोजन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इन गतिविधियों के माध्यम से छात्रों में नैतिकता का विकास किया जाता है।

9. समकालीन शिक्षा प्रणाली में मूल्याधारित शिक्षा की चुनौतियाँ

1. **बाजार आधारित शिक्षा प्रणाली:** वर्तमान समय में शिक्षा को एक व्यावसायिक उत्पाद के रूप में देखा जा रहा है, जहाँ मूल्यों की बजाय सफलता और धन का महत्व बढ़ गया है।
2. **प्रौद्योगिकी का प्रभाव:** तकनीकी प्रगति के साथ नैतिक मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है। सोशल मीडिया और इंटरनेट के उपयोग के कारण छात्रों के मानसिक और नैतिक विकास में बाधाएँ उत्पन्न हो रही हैं।
3. **शिक्षकों की भूमिका और प्रशिक्षण:** शिक्षकों का नैतिक और मूल्याधारित शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान होता है, लेकिन वर्तमान समय में शिक्षकों को इस दिशा में उचित प्रशिक्षण और संसाधनों की कमी का सामना करना पड़ता है।
4. **मूल्य और वैश्वीकरण:** वैश्वीकरण के इस युग में, मूल्य आधारित शिक्षा के स्थान पर भौतिकवाद और उपभोक्तावाद ने अपनी जगह बना ली है, जिससे छात्रों में नैतिकता का ह्रास हो रहा है।

10. मूल्याधारित शिक्षा का भविष्य

मूल्याधारित शिक्षा का भविष्य उज्ज्वल हो सकता है यदि इसे आधुनिक शिक्षा प्रणाली में सही ढंग से समाहित किया जाए। इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षा नीति में नैतिक शिक्षा को प्राथमिकता दी जाए, शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में नैतिकता पर जोर दिया जाए और छात्रों को नैतिक मूल्यों का व्यावहारिक अनुभव प्रदान किया जाए।

11. निष्कर्ष

मूल्याधारित शिक्षा केवल छात्रों के बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह उनके नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास को भी सुनिश्चित करती है। आज के समाज में जहां भौतिकवाद, प्रतिस्पर्धा और व्यक्तिगत सफलता की प्राथमिकता बढ़ गई है, वहाँ मूल्याधारित शिक्षा की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक हो गई है। एक ऐसे समाज का निर्माण जो शांति, न्याय और समानता पर आधारित हो, केवल मूल्याधारित शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्या प्राप्ति या व्यावसायिक कौशल का विकास नहीं है, बल्कि इसका अंतिम उद्देश्य व्यक्तियों को जिम्मेदार, सहिष्णु और मानवीय मूल्यों से समृद्ध बनाना है। जब शिक्षा नैतिक मूल्यों के साथ संयोजित होती है, तो यह न

केवल छात्रों को सफल बनाती है, बल्कि समाज को भी एक सशक्त और सकारात्मक दिशा में ले जाती है। मूल्याधारित शिक्षा का समावेश स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में अधिक से अधिक होना चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ियाँ न केवल ज्ञान में समृद्ध हों, बल्कि वे एक नैतिक और आदर्श समाज के निर्माण में भी अपना योगदान दे सकें। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में जिन नैतिक और सामाजिक चुनौतियों का सामना किया जा रहा है, उन्हें मूल्याधारित शिक्षा द्वारा ही प्रभावी ढंग से सुलझाया जा सकता है।

सिफारिशें

1. **शिक्षा नीति में बदलाव:** सरकार और शैक्षिक संस्थानों को शिक्षा नीति में मूल्यों और नैतिक शिक्षा को अनिवार्य रूप से सम्मिलित करना चाहिए। इसके लिए पाठ्यक्रमों में नैतिकता, करुणा, सहिष्णुता और जिम्मेदारी जैसे विषयों को प्रमुखता दी जानी चाहिए।
2. **शिक्षक प्रशिक्षण:** शिक्षकों का उचित प्रशिक्षण आवश्यक है ताकि वे छात्रों को न केवल शैक्षिक विषयों में बल्कि नैतिक मूल्यों में भी समृद्ध बना सकें। इसके लिए शिक्षकों के लिए मूल्याधारित शिक्षा पर आधारित विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।
3. **समाज में जागरूकता:** समाज में नैतिक मूल्यों की महत्ता के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए विभिन्न सामाजिक, धार्मिक और शैक्षिक संगठनों को सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। समाज को यह समझना होगा कि शिक्षा केवल सफलता का साधन नहीं है, बल्कि यह नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी को भी विकसित करती है।
4. **प्रौद्योगिकी और नैतिकता का संतुलन:** प्रौद्योगिकी के बढ़ते प्रभाव के साथ नैतिकता और मानवीय मूल्यों को बनाए रखने के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण आवश्यक है। छात्रों को सिखाया जाना चाहिए कि वे तकनीकी साधनों का उपयोग सकारात्मक और नैतिक उद्देश्यों के लिए करें।
5. **अनुभव आधारित नैतिक शिक्षा:** शिक्षण पद्धतियों में बदलाव की आवश्यकता है, जहां छात्रों को अनुभव आधारित नैतिक शिक्षा दी जाए। इसके लिए सामाजिक कार्य,

स्वैच्छिक सेवाएँ और नैतिक दृष्टिकोणों पर आधारित गतिविधियाँ आयोजित की जानी चाहिए।

6. **वैश्विक नागरिकता का विकास:** मूल्याधारित शिक्षा के माध्यम से छात्रों में वैश्विक नागरिकता के गुणों का विकास किया जाना चाहिए। इसके तहत वे न केवल अपने देश के लिए, बल्कि पूरी दुनिया के प्रति जिम्मेदार बन सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अरोड़ा, राजीव (2018). मूल्याधारित शिक्षा का महत्व: एक समकालीन दृष्टिकोण. नई दिल्ली: शिक्षा भारती प्रकाशन।
2. गांधी, महात्मा (1948). बुनियादी शिक्षा के सिद्धांत. अहमदाबाद: नवजीवन प्रकाशन।
3. विवेकानंद, स्वामी (1897). शिक्षा और जीवन के आदर्श. कोलकाता: अद्वैत आश्रम।
4. कुमार, कृष्ण (2005). भारतीय शिक्षा और नैतिकता का विकास. नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
5. एनसीईआरटी (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद।
6. नेहरू, जवाहरलाल (1963). भारत की खोज. दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
7. रोय, प्रदीप (2009). शिक्षा और मूल्य: आधुनिक दृष्टिकोण. कोलकाता: साउथ एशियन पब्लिकेशन्स।
8. सिंह, योगेंद्र (2012). समकालीन शिक्षा में मूल्य का महत्व. वाराणसी: ज्ञान भारती प्रकाशन।
9. यशपाल समिति (1993). शिक्षा सुधार रिपोर्ट. नई दिल्ली: मानव संसाधन विकास मंत्रालय।
10. श्रीधर, के. एस. (2003). भारत में नैतिक शिक्षा: एक समग्र दृष्टिकोण. बेंगलुरु: मैकमिलन पब्लिकेशन्स।